Jan 2021 - Mar 2021, Vol 7, No. 1, 01-07 ISSN : 2394 -9449

Electronic Journal of Advanced Research

An International Peer review E-Journal of Advanced Research

Research Articles

सामाजिक परिवेश में नवीन मूल्यों का समावेश करने वाली शिवानी : एक अध्ययन

शिप्राद्विवेदी [1] विवेकानंदपाण्डेय[1]

1- शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म0प्र0)

Received : 25-Feb-2021	Revised : 03-Mar-2021	Accepted : 08-Mar-2021

प्रस्तावना

शिवानी मात्र एक नारी नहीं परंपरा की सार्थवाह हैं उसकी एक सशक्त कड़ी है,पर ऐसी जो अतीत को वर्तमान से और वर्तमान को भावी से जोड़ती हैं।अतीत के रस- निर्झरमेस्नात होकर वर्तमान की गंध को वितरित करते हुएशिवानी ने भावी पीढ़ी के लिए जिन अमृत बिंदुओं की साहित्यिक आँगन में वर्षा की है,वह उसके लेखन को प्रमाणिक भी बनाते हैऔर विश्वसनीय भी।स्वातंत्रय पूर्व के भारत को उन्होंनेजिया है, उस समाज को सभी परिवर्तनों, मूल्यों को बारीकी से परखा है और उस परिप्रेक्ष्य में स्वतंत्र भारत का चित्रआका है।उनका लेखन अनुभव सिद्ध लेखन है और उनकी प्रतिभा कहानियों के रूप में जीवन केकणबटोरती हुई गहरे और दीर्घ परिश्रम के साथ परिपक्व होकरउपन्यासों के प्रकाश में आते ही शिवानी जी हिंदी साहित्य जगत का महत्वपूर्ण स्तंभ बन गयी। वर्तमान और अतीत दोनों को ही उनकी सृजनप्रतिभा ने समेट लिया है। वस्तुतः वर्तमान को देखने के लिए ही उन्होंने अतीत की गाँठे खोली हैं।शिवानी जी की लेखनी ने हिंदी गद्य- साहित्य की विविध विधाओं का स्पर्श किया है। और वे हर प्रकार की रचना में सफल हुई हैं।

उद्देश्य

शिवानी ने अपनी बहुआयामी प्रतिभा को विविध रूपों में रूपायित किया है।"सर्वेक्षणकार्य"के द्वारा जहाँ उनके अदम्य कौतूहल, साहस, संवेदनशीलता और मानवीयता के दर्शन होते हैं, वहीं समूचे- साहित्य के द्वारा उनके चरित्र की कोमल चेतना का भीसंस्पर्शहोताहैं।उपन्यास सृजन उनकी रचनात्मक प्रतिभा का अनूठा आयाम है।जिसकेद्वाराघटनाओंकासंयोजनऔरउर्वरकल्पनाशीलता का अनोखा संयोजन हुआ है। इसी प्रकार जीवन के कण–कण सेबटोरीजानेवालीअनुभूतियोंपर पग-पग पर होने वाले अनुभवों का अंकन रेखाचित्रोएवं उपन्यासों के रूप में हुआ है।उन्होंने पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर समाज के प्रगतिशील मूल्यों की स्थापना की है। उनकी रचनाएं विशेषत: सामाजिक उपन्यास वर्गगत-संघर्ष और शोषण एवं सामाजिक पुनरुत्थान के उद्देश्यों से परिपूर्ण हैं।

शिवानी ने मुख्य रूप से मध्यवर्गीय समाज के समस्याओं के अंतर्वाहय स्वरूप का यथार्थ चित्रण किया है।प्रेमचंद नगर के सामाजिक चिंतन को नया आयाम देते हुए उन्होंने कथ्य और शिल्प दोनोंदृष्टियोंसेयुग- परिवेश के मध्य जीवन- मूल्यों का पूर्ण सजगता के साथ विश्लेषण किया हैं। प्रेमचंद ने सामाजिक जीवन पद्धति का आदर्शवादी अंकन किया है।तत्कालीन युग में सामाजिक मर्यादाएजन-जीवन को जकड़े हुए थीं,विद्रोहात्मक चेतना विवशतापूर्वक दब- घुट कर रह जाती थी।प्रेमचंद ने यद्यपि उस पीड़ा को स्वर दिया किंतु त्याग एवं समर्पण के आदर्श के आगे क्रांति का विस्फोट ना होने पाया।आगे आने वाले कथाकारो ने युग एवं वातावरण के बदलते परिवेश के अनुसार सामाजिक परंपराओं एवं मानव की आंतरिक व्यक्तियों का खुला चित्रण किया।शिवानी ने किसी मनोविश्लेषणात्मक ग्रंथ में न फँसकर सामाजिक शक्तियों का स्वस्थ उद्घाटन किया।सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह एवं नए युग की मान्यताओं का समर्थन शिवानी-साहित्य में किया गया है।

यथार्थवादी धरातल पर संपूर्ण मानवतावाद की प्रतिष्ठा उन्हें प्रेमचंद के सैद्धांतिक दृष्टिकोण का अनुयायी बनाती है किंतु प्रेमचंद और शिवानी जी में भारतीय-स्वतंत्रता की संक्रांति कालीन पीढ़ी का भेद है।व्यक्ति के अंतर्मन में प्रवेश कर एक व्यापक चेतना विशाल फलक और सामान्य कार्य बौद्धिकता ने शिवानी को किसी भी प्रगतिशील आधुनिक कथाकार से पीछे नहीं रखा उन्होंने नागरिक जीवन की जटिलताओं वि श्रृंखलाओं और मानवीय व्यवस्थाओं का वैज्ञानिक निरूपण किया है।पीढ़ी के युग भेद अनुसार शिवानी में रूढ़ियों का विरोध और विकृतियों का चित्रण किया है।प्रेमचंद ने जिन सदनों, आश्रमों को नारी कीविवशताओं का समाधान बतलाया उन्हीं आश्रमों में पनपने वाली विकृतियों का भंडाफोड़ नागर जी ने 'बूद और समुद्र' और 'अमृत और विष' में किया।यहीं से परंपरानुसरण करते हुए शिवानी ने 'भैरवी'और'चौदह फेरे'उपन्यासों में यही स्थिति चित्रित की है वस्तुतः शिवानी जी ने नारी को समस्या नहीं बनाया,समाज की एक अनिवार्य अंग के रूप में एक स्वतंत्र इकाई के रूप में उसके अस्तित्व की सर्वत्र प्रतिष्ठा की है।कृष्णकलीकी पन्ना,चौदह फेरे की नंदी सुरंगमा की लक्ष्मी जैसी पात्राएं, उन की नारी भावना का प्रतिनिधित्व करती हैं।शिवानी के सभी उपन्यासों मेंनारी जीवन की बहुतेरे स्वर खुलते हैं।यह बात निर्विवाद सत्य है कि इस रूढि- गत और पुरुष प्रधान समाज में स्त्री का व्यक्तित्व कुचला हुआ है।हमारे समाज में इस समय भी लाखों–करोड़ों औरतें ऐसी हैं जो भयंकर से भयंकर परिस्थितियों से भी अपने भाग्य पर संतुष्ट रहती हैं और पति तथा परिवार का अत्याचार चुपचाप सहती है।

शिवानी की एक प्रमुख विशेषता यह है कियह किसी वाद दुराग्रहोएवं कुंठाओसे ग्रसित नहीं है।सामाजिक परंपराओं के विरोध एवं समाधान के अतिरिक्त स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति के विकृत रूप को निर्भयता-पूर्वक सामने रखा है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में पूँजीवादी षड्यंत्रऔर सामान्य जनता का

शोषण,नेताओं का सत्तामदपैनेरूप में व्यंगात्मक शैली से प्रस्तुत किया है।क्या का जीवन संबंधी दृष्टिकोणउनके साहित्य में व्यक्त हुआ है। साहित्यकार जीवन का पर्यवेक्षक नहीं, यह दार्शनिक भी होता है।जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोणउसकी कृतियों के माध्यम से संसार के सामने आता है।

शिवानी के उपन्यासों के दो मुख्य धरातल हैं।आज की महानगरीयचेतना के विभिन्न स्तरों को शिवानी परत दर परत खोला है, और इस प्रकार प्याज के छिलके की तरह एक के बाद एक और दूसरी समस्याएं खुलती चली गयी हैं।नगर- जीवन की इन तमाम समस्याओं के केंद्र हैं- दिल्ली, कोलकाता, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, मुंबईआदि।। आज शिवानी प्रारंभ से ही बहुत भ्रमणशील लेखिका रही हैं। और जिन- जिन नगरों से उनका परिचय हुआ है, उन- उन नगरों का एक वातावरणउनके उपन्यासों में कहीं न कहीं अवश्य चित्रित हुआ है।महानगरीय जीवन की घुटन संत्रस्त स्थितियाँ प्रदूषण, भीड़- भड़क्का, शोरगुल गंदी बस्तियाँ और सतमंजिली इमारतो आदि के चित्र विशेष रूप से उभरते चले गए हैं।उन सब के बीच अनेक – पुरुषों के चेहरेएक-दूसरेसेटकरातेहुएनजरआतेहैं।इसके साथ–साथ स्त्री पुरुषों के संबंधों और समस्याओं के रूप में अंकित हुए हैं।नगर जीवन के बादशिवानी के उपन्यासों में पहाड़ी जीवन का यथातथ्यभीउजागरहुआहै।पहाड़ी लोगों के रहन–सहन अशिक्षा रोग और अंधविश्वास आज के चित्र किसके साथ जुड़े हुए हैं।लेकिन एक बात और भी है कि पहाड़ी जीवन का भोला रूप भी इन सब के बीच झाँकता नजर आता है।

भारतीय समाज अपनी समस्त पीड़ा एवं उच्छवासों से शिवानी साहित्य में करा उठा है जहाँउन्होंने जीवन की यथार्थवीभत्सता के निम्नतम स्तर का चित्र खींचा है।वहीं वे उसके समाधान के नूतन परिवर्तन की आग्रह का सांस्कृतिक आधार भी प्रस्तुत करते हैं आर्थिकस्वातन्त्रय,रोगियों के प्रति विद्रोह और बदलते संदर्भ आयोजित एवं प्रेम विवाह नारी समस्या युवा आक्रोश शिक्षा और भाषा की

समस्या सांप्रदायिकता आदि विभिन्न समस्याओं का सुलझा हुआ समाधान शिवानी ने अपने साहित्य द्वारा प्रस्तुत किया है।शिवानी साहित्य में विभिन्न समस्याओं के साथ पुरातन मानवीय मूल्यों के पुनर्निर्माण की ओर संकेत किया गया है आज हमें अपनी रुढिया बदलकर नए मानदंड स्थापित करने होंगे।वेन तो अत्यंत प्राचीन होने चाहिए और ना ही आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित जीवन मूल्य भी किस काम के,, जो लोक लाज कुल- मर्यादाकोताकपरहीरखदें। आज हमें मध्यम मार्ग को ही अपनाने की आवश्यकता है।

आज के वैज्ञानिक भौतिकवादी मानस में प्रयुक्त आनंद की प्रतिष्ठा करने की कोशिश शिवानी जी ने सर्वत्र की हैं।शिवानी का समन्वयात्मक आदर्श यथार्थपरक है। यह आदर्श गाँधीवाद के अहिंसा, सत्य, मानवतावाद का अखंड स्वरूप बनकर साम्यवाद में प्रतिच्छायित हुआ है।यथार्थ की विषमताओं से जूझ कर मानव निराशा और पलायन की चरम सीमा में पहुँचकर भी मृत्यु का वरण नहीं करता, वरन् घोर अंधकार में प्रकाश किरण पा जाता हैं।यह कठोर जिजीविषा साहित्य की स्वस्थ दृष्टि बनकर विकीर्ण हुई है। यह यथार्थ,अयथार्थ नहीं असंभाव्य भी नहीं,असत् पर सत्य की विजय का स्वाभाविक किंतु भारतीय संस्कृति का पारस्परिक आदर्श रूप है।रूढ़ियों से उन्हें घृणाहै, आधुनिकता के प्रति कोमली भाव किंतु नए और पुराने का सामान्य करने का ही प्रयत्न सर्वत्र किया है। लेखिका इस ओर ध्यान आकृष्ट्कराना चाहती है "आज समग्र संसार एक दुर्घट समय से गुजर रहा है प्रत्येक की अपनी निजी समस्याएं हैं, कई मोहक आश्वासनों सेवह बार- बार छला जा चुका हैऔर पूर्ण रूप से वह मुँह बंद की स्थिति में पहुँच चुका है,किंतु भले ही कुछ सुनने का धैर्य उसमें न रहा हो, दीर्घ उपदेशात्मक भाषणों के प्रतिउसकी अरुचि उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है।अभी भी अच्छी बातों को सुननेवालों का अभाव नहीं है। और उसमें संवाद की स्थिति, निश्चय ही बनायी जा सकती है।बशर्ते आप में कडुवेसत्य को उगलने का

साहसहो।"इस प्रकार सत्य के ज्वलंत प्रकाश में शिवानी जी ने जो कुछ भी लिखा हैवह अंत तक शतत् प्रवहमान और सक्रिय रहा हैं।

उपसंहार

कई बार ऐसा प्रतीत होने लगता है कि यह व्यापकता व्यवहारिक बन गयी है।उनके समकालीन साहित्यकार प्रायः किसी न किसी प्रचलितवादके धरातल से बँधे हैं। कुछ प्रगतिवादी हैं तो कुछ साम्यवादी, कुछ समाजवादी हैं तो कुछ मनोविश्लेषणवादी। शिवानी की समकालीन साहित्यकारों में मन्नू भंडारी ने मध्यवर्गीय समाज कीकुंठाओ,आकांक्षाओ को चित्रित किया है मन्नू भंडारी की भाँति प्रगतिशील विचारों की समर्थक होते हुए भी शिवानी- साहित्य अपेक्षाकृत विविध धरातल पर चित्रित है यशपाल और नागार्जुन में विचारों का पैनापन उद्देश्य की सक्षमता एवं तीव्र संप्रेषणीयताके बावजूद मार्क्सवादी चिंतन धारा का प्राधान्य है। किंतु शिवानी समस्त संवेदनशीलता और पैने व्यंग के साथ किसी विशिष्ट चिंतन धारा से होकर नहीं लिखतीवरन्उनका जीवन दर्शन प्रखर यथार्थ चेतना से मंडित प्रेमचंद के उदात्त मानवतावाद कासमर्थन करता है। शिवानी का साहित्य लखनऊ की पृष्ठभूमि पर आधारित है किंतु उन्हें आँचलिक कथाकार नहीं कहा जा सकता। उन्होंने समस्त भारतीय समाज के सामान्य जीवन का चित्रण किया है।

संदर्भ

1-साहित्यशास्त्र-डॉ.रामकुमार

2-.शिवानीकाहिन्दीसाहित्य,सामाजिक परिप्रेक्षमें- डॉ. ज्योत्स्नाशर्मा

3-भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका -डॉ नगेंद्र

4-छायावादी कवियों का सौंदर्य विधान-

5-साहित्य अनुसंधान के प्रतिमान डॉक्टर- देवराज

6-नया साहित्य नये प्रश्न- नंददुलारे वाजपेयी